ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
Date of Dispatch 12&13 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : नागरिकता कानून का विरोध...	2
2.	आओ जाने ये सृष्टि कैसे...	3
3.	प्रार्थना-प्रवचन : उपसंहार	4-5
4.	गौतम ऋषि का न्याय दर्शन	6
5.	सदाचार, नैतिकता और कर्म का...	7
6.	वैदिक धर्म क्यों महान है...	8-9
7.	हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः	10
8.	महापुरुषों को नमन	11
9.	वार्षिकोत्सव की झलकियां...	12-15
10.	समाचार-सूचनाएं	21
11.	आर्यसमाज नोएडा का भव्य...	22-23
12.	सुस्वास्थ्य : रामबाण है पतीता...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
 # 9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

नागरिकता कानून का विरोध?

हमारे देश के सोचने का ढंग विचित्र सा नजर आता है। जिन बातों से देश को कोई नुकसान नहीं, उन्हीं बातों को लेकर लोगों द्वारा देश की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाना कहां तक जायज है? आंदोलन करना संवैधानिक अधिकार है, अपनी बात रखना जरूरी है, ये भी स्वभाविक है कि हर बात से आप सहमत नहीं हो सकते। किंतु अपने देश की सम्पत्ति को जलाना, अपनी सेवा करने वाली पुलिस को पत्थर मारना, गाली-गलौच, अपशब्दों का प्रयोग करना नितांत निंदनीय है। कभी-कभी मैं महसूस करता हूं कि हमारे देश की जनता भेड़चाल में ज्यादा विश्वास रखती है। बिना सोचे-समझे आंदोलन में एक-दूसरे के पीछे चलते हैं। नागरिकता कानून को कम से कम समझने का ईमानदारी से प्रयास करना चाहिए। जो पक्ष में है वे विनम्रता से समझाने की बजाय अहंकार प्रदर्शन में लगे हुए हैं, जो विरोध में है वे कुछ सुनना ही नहीं चाहते। जिस कारण देश की जनता निरर्थक पिस रही है। देश में यदि सबसे बड़ी समस्या है तो वह है बेरोजगारी की। राष्ट्रीय बेरोजगारी 80 प्रतिशत है, शिक्षित बेरोजगारी 20 प्रतिशत है। यदि सही अर्थों में आंदोलन की आवश्यकता है तो यह है बेरोजगारी के विरुद्ध लड़ने की।

आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी : भारत माता पर जब-जब संकट के बादलों ने दस्तक दी, तब-तब कोई न कोई सूर्य बनकर उन बादलों को काटने के लिए इस धरातल पर अवतरित हुए हैं। उन्हीं के लिए कहा गया है- **वीरभोग्या वसुंधरा,** इसी क्रम में स्वामी श्रद्धानन्द जी के रूप (फाल्गुन कृष्ण त्र्योदशी विक्रम सं. 1913 तद्नु 2 फरवरी सन् 1856 को एक दिव्य तेजस्वी बालक (मुंशीराम विज) ने जन्म लिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बरेली प्रवचन से इतने प्रभावित हुए कि अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के सच्चे प्रहरी के रूप में व्यतीत किया। वे महान शिक्षाविद, स्वतंत्रता सेनानी थे। सन् 1901 में उन्होंने वैदिक धर्म एवं भारतीयता की शिक्षा हेतु एक वैदिक गुरुकुल की स्थापना कांगड़ी हरिद्वार में की जो आज मानद विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में आज भी अनवरत कार्यरत है। सन् 1919 में स्वामी जी ने दिल्ली में जामा मस्जिद क्षेत्र में आयोजित एक विशाल सभा में भारत की स्वाधीनता के लिए प्रत्येक नागरिक मत पंथ को विस्मृत करके एकजुट होने का आह्वान किया।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

शुद्धि आंदोलन : अनेकों हिन्दुओं को मुस्लिम एवं ईसाई होने से बचाने हेतु उन हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित करने हेतु प्रमुख शुद्धि आंदोलन चलाया था। इसी से क्षुब्ध होकर एक अन्मादी मुस्लिम धर्मावलम्बी अब्दुल रशीद ने 23 दिसम्बर 1926 को धार्मिक चर्चा के बहाने उन्हें गोली मार दी। जिससे महान् संन्यासी श्रद्धानन्द जी को असमय ही काल कवलित होना पड़ा। किन्तु श्रद्धानन्द जी अपने यश के कारण आज भी आर्यों के हृदय मंदिर में जीवित हैं। कहा भी गया है- स्वामी श्रद्धानन्द जी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बरेली प्रवचन से इतने प्रभावित हुए कि अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के सच्चे प्रहरी के रूप में व्यतीत किया। वे महान शिक्षाविद, स्वतंत्रता सेनानी थे। सन् 1901 में उन्होंने वैदिक धर्म एवं भारतीयता की शिक्षा हेतु एक वैदिक गुरुकुल की स्थापना कांगड़ी हरिद्वार में की जो आज मानद विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में आज भी अनवरत कार्यरत है। सन् 1919 में स्वामी जी ने दिल्ली में जामा मस्जिद क्षेत्र में आयोजित एक विशाल सभा में भारत की स्वाधीनता के लिए प्रत्येक नागरिक मत पंथ को विस्मृत करके एकजुट होने का आह्वान किया।

आओ जाने ये सृष्टि कैसे बनी

■ राकेश उपाध्याय

परमात्मा जैसे ही इसमें रश्मि के द्वारा परा वाणी और वेद मंत्रों से पश्यन्ति वाणी रूप में स्पंदन करता है, वैसे ही प्रकृति में विकार होकर पहले काल उत्पन्न होता है, जैसे ही काल शुरू हुआ, उसके बाद तीसरा गुण तम भी उत्पन्न हो जाता है, जैसे ही तीनों गुण सत, रज, तम उत्पन्न होते है तभी महत्त, अहंकार, मन लगभग पूरी सृष्टि में भर जाता है।

वेद मंत्रों से, परंतु कैसे? इन वेद मंत्रों की वाणी से मूल प्रकृति में विकार करके ये पूरी सृष्टि (ब्रह्माण्ड) बनी है। सृष्टि निर्माण की पूरी विधि ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ में दी हुई है जिसको ऋषि ऐतरेय महिदास ने लिखा है। हमारे ऋषि समाधि में जाकर आत्मा द्वारा किसी भी तत्व का अनुसंधान करते थे फिर उसको आम लोगों को बताते थे। प्रलय के बाद सृष्टि कैसे बनती है और आज भी बहुत कार्य परमात्मा के कैसे हो रहे है, छोटे रूप में आपको बता रहा हूं?

वाणी के चार प्रकार हैं : मुख से जो वाणी कान तक जाती है उसको बैखरी वाणी कहते है, कान के परदे से जो वाणी बुद्धि तक जाती है उसको मध्यमा वाणी और जो बुद्धि से मन तक जाती है उसको पश्यन्ति वाणी, एवं जो मन से आत्मा में जाती है उसको परा वाणी कहते है। जो भी वाणी हम बोलते है उसको आत्मा परा वाणी के रूप में ही सुनती है। प्रमाण जैसे जब हम कोई कार्य करते है, सबसे पहले आत्मा में विचार आता है, फिर आत्मा उसको मन को भेजती है, फिर मन उसको बुद्धि के पास भेजता है फिर बुद्धि उसमें सही गलत का तर्क लगाती है, जब बुद्धि निर्णय लेती है तब हम वह कार्य करते है। जैसे कार्य हमारी आत्मा करती है वैसे ही परमात्मा कार्य करता है। ये ही चरण परमात्मा के है- तीन सत्ता अनादि है आत्मा, परमात्मा, प्रकृति। परमात्मा सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अंतर्यामी है।

सृष्टि के आरम्भ में मूल प्रकृति, महांधकार, गतिहीन, एकरस होती है। परमात्मा जैसे ही इसमें रश्मि के द्वारा परा वाणी और वेद मंत्रों से पश्यन्ति वाणी रूप में स्पंदन करता है, वैसे ही प्रकृति में विकार होकर पहले काल (सत्त गुण, रज गुण) उत्पन्न होता है, जैसे ही काल शुरू हुआ, उसके बाद तीसरा गुण तम भी उत्पन्न हो जाता है, जैसे ही तीनों गुण सत, रज, तम उत्पन्न होते है तभी महत्त, अहंकार, मन लगभग पूरी सृष्टि में भर जाता है। मन का कुछ हिस्सा मानव एवं जीव जंतु के पास आता है बाकी पूरे ब्रह्माण्ड का मन परमात्मा के नियंत्रण में रहता है। इसी प्रकृति से परमात्मा, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, गृह, एवं जो आज दिखाई दे रहा है उस सबको आत्मा के त्यागपूर्वक उपयोग के लिए बनाता है, इसलिए परमात्मा हम सबका पिता है।

परमात्मा इस ब्रह्माण्ड के मन में वेद मंत्रों की परा, पश्यन्ति वाणी (रश्मि) से प्रकृति में विकार करके पूरी सृष्टि रचता है। परमात्मा आज भी उन्हीं वेद मंत्रों से मानव, जीव-जंतु, पेड़ आदि आज भी बना रहा है। जिन पंचत्तव से परमात्मा ने ये सृष्टि बनायीं है उसमें से आधुनिक विज्ञान का कुछ ही जानता है, आकाश और वायु का इसको कुछ नहीं पता। इसलिए उसको काल, बल, ऊर्जा, ध्वनि, द्रवमान, विद्या तक की परिभाषा नहीं मालूम है। ये विज्ञान महाभारत तक पूरे विश्व में था, महाभारत में ऋषियों की मृत्य के बाद ये ज्ञान लुप्त होने लगा। परमात्मा तो निराकार है, इसी का फायदा लम्पट, अधर्मियों ने महाभारत के बाद उठाया और आज भी बहुत लोग खुद परमात्मा बन बैठे, आम लोगों को ठग रहे है।

इस विज्ञान को न तो आधुनिक विज्ञान जानता और न ही लम्पट लोग जानते और दोनों जानते भी नहीं और वेद की बात मानते भी नहीं है। इन दोनों की वजह से आज मानव एवं जीव -जंतु के जीवन पर संकट है। जिन आचार्य अग्निवर्त नैष्ठिक जी ने ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ का Decode किया है NASA और दूसरे लोग भी उनको धमकी दे रहे हैं। भाई आम लोग ही वेद विद्या को बचा सकते हैं, हमने भारत सरकार को ये बात बताई है परंतु हमें अभी सफलता नहीं मिली है, प्रयास जारी है। अब हमारा प्रयास है की इसको जन-जन तक पहुंचाएं और हम केवल ढाई घंटे में वैदिक डॉक्टर, वैदिक कृषि वैज्ञानिक, वैदिक प्रबंधक, बलिष्ट का प्रशिक्षण दे रहे है। भाइयों अपने जीवन को बचाना है तो वेद विद्या की शरण में आ जाओ, अन्यथा आधुनिक वैज्ञानिक एवं अधर्मियों ने हम सबको मारने की सुपारी ली हुई है। जब तक जीवित है तब तक हम वेद का प्रचार करते रहेंगे। ○○

71वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्त जनों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

- प्रबंध संपादक

प्रार्थना-प्रवचन : उपसंहार

अब प्रार्थना-प्रवचन के उपसंहार की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।
- प्रबंध संपादक

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

महर्षि ने 'विश्वानि देव' आदि आठों मंत्रों का सामूहिक शीर्षक 'ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना' दिया है। ये आठों मंत्र एक साथ इस रूप में, स्वामी दयानन्द जी से पूर्व, अंयत्र और कहीं नहीं मिलते। स्वस्तिवाचन और शांतिकरण के कई मंत्र प्राय: उसी आनुपूर्वी के साथ संहिताओं में और सूत्र ग्रंथों में उपलब्ध होते हैं। किंतु 'ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना' के आठ मंत्रों का संकलन स्वामी जी महाराज की स्वोपज्ञता है। इस कालखंड के समर्थ गृह्य सूत्रकार स्वामी दयानन्द जी ने 'संस्कार विधि' के रूप में हम लोगों के लिए एक उपयोगी गृह्यसूत्र का संकलन कर दिया है। चारों वेद संहिताओं के बीस हजार से अधिक मंत्रों में से केवल आठ मंत्र, न सात, न नव, दश या ग्यारह। परम्परा से ये सब संख्याएं धार्मिक क्रियाकलाप में अधिक प्रचलित हैं। किंतु ऋषि ने आठ मंत्रों का संकलन किया। उसमें भी सात मंत्र यजुर्वेद के और एक मंत्र ऋग्वेद का लिया। ये मंत्र भी अध्याय आदि की दृष्टि से अत्यंत स्फुट।

प्रथम 'विश्वानिदेव' यजुर्वेद अध्याय 30 मंत्र 2, द्वितीय 'हिरण्यगर्भ:' यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 4, तृतीय 'य आत्मदा बलदा' यजुर्वेद अध्याय 25 मंत्र 13, चतुर्थ 'य: प्राणतोनिषत:' यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र 3, पंचम 'येन द्यौरुग्रा' यजुर्वेद अध्याय 32 मंत्र 6, षष्ठ 'प्रजापते न त्वदेतानि' ऋग्वेग मण्डल 10 सू. 121 म.10, सप्तम 'सनोबस्पुर्जनिता' यजुर्वेद अध्याय 32 मंत्र 10, अष्टम 'अग्ने नय सुपथा' यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 16। इन मंत्रों के संकलन में आपातत: कोई क्रम नहीं दीखता। जब प्रतीकों में कोई क्रम नहीं है तो अर्थों में कोई क्रम है या नहीं, यह अंवेषणीय हो जाता है।

ये मंत्र स्तुति, प्रार्थना, उपासना के हैं। स्तुति का अर्थ है 'गुणगान करना, जहां परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव, आदि का वर्णन है, वह स्तुति है। जब हम परमेश्वर से कुछ याचना करते हैं तो वह प्रार्थना है और जब हम प्रभु के समीपस्थ होने का, भक्ति भाव से उपस्थित होने का प्रयास करते हैं तो यह उपासना का प्रसंग बनता है । प्रथम मंत्र 'विश्वानि देव' में शुद्ध प्रार्थना है। भक्त भगवान को प्रेरक उत्पादक के संबोधन से पुकारता है और दो याचनाएं करता है- एक तो 'दुरितानि परासुव'-प्रभो हमारे दुरिता को, दुष्ट गुण कर्म स्वभाव को टार ज्ञानगमन प्राप्ति को दूर कर दीजिए और दूसरे, संसार में जो भद्र है-कल्याणकारी है, इस लोक और परलोक में जो हमें सुख दें, आनन्द दे, हमारा कल्याण करे, उसे हमें प्राप्त कराइए-'यद् भद्रं तन्न आसुव'-प्रभो दुरित दूर कीजिए और भद्र की प्राप्ति-उपलब्धि कराइए।

यह अपने में महान् से महान्, बड़ी से बड़ी प्रार्थना है। दुरित दूर हो जाय और भद्र मिल जाय तो और क्या चाहिए। अब याचना करने को कुछ शेष भी तो नहीं रह जाता। यह मंत्र स्वामी दयानन्द जी महाराज को बहुत प्रिय था। इस मंत्र से उन्होंने अनेकत्र प्रार्थनाएं की हैं। यजुर्वेद के अपने भाष्य में प्राय: सर्वत्र इसी मंत्र से प्रार्थना की है। कई विद्वान तो विश्वानि देव मंत्र को जप करने का भी उपदेश

स्वस्तिवाचन और शांतिकरण के कई मंत्र प्राय: उसी आनुपूर्वी के साथ संहिताओं में और सूत्र ग्रंथों में उपलब्ध होते हैं। किंतु 'ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना' के आठ मंत्रों का संकलन स्वामी जी महाराज की स्वोपज्ञता है। इस कालखंड के समर्थ गृह्य सूत्रकार स्वामी दयानन्द जी ने 'संस्कार विधि' के रूप में हम लोगों के लिए एक उपयोगी गृह्यसूत्र का संकलन कर दिया है। चारों वेद संहिताओं के बीस हजार से अधिक मंत्रों में से केवल आठ मंत्र, न सात, न नव, दश या ग्यारह। परम्परा से ये सब संख्याएं धार्मिक क्रियाकलाप में अधिक प्रचलित हैं। किंतु ऋषि ने आठ मंत्रों का संकलन किया। उसमें भी सात मंत्र यजुर्वेद के और एक मंत्र ऋग्वेद का लिया। ये मंत्र भी अध्याय आदि की दृष्टि से अत्यंत स्फुट। प्रथम 'विश्वानिदेव' यजुर्वेद अध्याय 30 मंत्र 2, द्वितीय 'हिरण्यगर्भ:' यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 4, तृतीय 'य आत्मदा बलदा' यजुर्वेद अध्याय 25 मंत्र 13, चतुर्थ 'य: प्राणतोनिषत:' यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र 3, पंचम 'येन द्यौरुग्रा' यजुर्वेद अध्याय 32 मंत्र 6, षष्ठ 'प्रजापते न त्वदेतानि' ऋग्वेग मण्डल 10 सू. 121 म.10, सप्तम 'सनोबस्पुर्जनिता' यजुर्वेद अध्याय 32 मंत्र 10, अष्टम 'अग्ने नय सुपथा' यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 16। इन मंत्रों के संकलन में आपातत: कोई क्रम नहीं दीखता।

करते हैं। इस प्रकार इन मंत्रों के संकलन में आनुपुर्वी की दृष्टि से 'विश्वानि देव' का प्रथम स्थान सर्वथा संगत है। ईश्वर की स्तुति-उपासना के संकलन में ऐसी भावगर्भित प्रार्थना उपक्रमणिका के रूप में भी पूर्णत: सटीक बैठती है।

द्वितीय मंत्र 'हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे' मूलत: स्तुति परक है। मंत्र में परमेश्वर के गुणों को स्मरण किया गया है । यह मंत्र सृष्टि-उत्पत्ति से पूर्व को स्थिति से आरम्भ करके सृष्टि काल में परमेश्वर के गुणात्मक कृतित्व का वर्णन कर रहा है। सृष्टिनिर्माण से पूर्व, प्रलयकाल में प्रकृति के परमाणुओं को सृष्टि के निर्माण के लिए उपयुक्त समर्थ बनाना, उनकी पालना करना, पश्चात सूर्यादि हिरण्यमय लोकों और पृथ्वी आदि को धारण पालन करना रूप प्रभु की स्तुति प्रस्तुत कर रहा है।

तृतीय मंत्र में परमेश्वर की स्तुति 'आत्मदा बलदा' के रूप में उपासक के और भी समीप आ गई। अपने आत्मज्ञान और शरीर आत्मा एवं समाज: संगठन के बल के स्रोत के रूप में प्रभु का गुणगान सर्वथा समीचीन है। संसार का निर्माण करके प्रभु ने हमें हमारी क्षमता का ज्ञान कराया। चतुर्थ मंत्र 'य: प्राणतो निमिषत:' है। परमेश्वर ने प्रलयकाल में प्रकृति को समर्थ बनाकर सृष्टि का निर्माण किया और सूर्य पृथ्वी द्यौ अंतरिक्ष सबका पालन पोषण करते हुए हमें आत्मज्ञान और बल क्षमता आदि का दान दिया। और प्रभु की छाया, आश्रय, उपदेश आदि के द्वारा जीवन के कल्याण का। छाया, आश्रय, उपदेश आदि के द्वारा जीवन के कल्याणी मार्ग दिखाया। अब चतुर्थ मंत्र में प्राणेन्द्रिय क्रियाओं को सन्निविष्ट करके प्रभु के ईश्वरत्व, शासन का प्रसंग उठा है। प्राण और चेष्टा उनके बिना तो जीवात्मा कल्याण के मार्ग पर हो नहीं सकता। प्राण ही तो चेतन जीव और जड़ शरीर के मध्य संबंध सेतु बन कर मन बुद्धि चित्त आदि को, ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को आत्मा का उपकरण, अंत:करण और बहिष्करण के रूप में सक्रिय करता है। सो चतुर्थ मंत्र भी मूलत: स्तुतिपरक है।

पंचम मंत्र 'येन द्यौरुग्रा' भी मुख्य रूप से स्तुति का मंत्र है। किंतु द्वितीय मंत्र हिरण्यगर्भ: से आरंभ करके पंचम मंत्र येन द्यौरुग्रा पर्यन्त प्रत्येक मंत्र के अंत में 'कस्मैदेवाय हविषा विधेम' भी समापन टेक लगी हुई है। एक ही बात इन आठ मंत्रों में चार बार कही गयी है। इस मंत्रांश का शब्दार्थ तो यह हुआ कि हम उस सुख स्वरूप परमात्म देव के लिए भक्तिपूर्वक हविर्दान करें। किंतु इन मंत्रों का ऋषि निर्दिष्ट अर्थ स्वयं में हृदयग्राही एवं बुद्धि-रमणीय है।

1. हिरण्यगर्भ: मंत्र में : हमलोग उस (कस्मै) सुख स्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिए (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें।

2. य आत्मदा बलदा मंत्र में : हमलोग उस (कस्मै) सुख स्वरूप (देवाय) सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) आत्मा और अंत:करण से (विधेम) भक्ति अर्थात उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

3. य: प्राणतो निमिषत: मंत्र में : हमलोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा के लिए (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री से (विधेम) विशेष भक्ति करें।

4. येन द्यौरुगा मंत्र में : हमलोग उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष भक्ति करें। इन अर्थों में 'हविषा' और 'भक्ति' दो शब्दों के अर्थों पर विशेष मनन अपेक्षित है। ऋषि हविषा का अर्थ लिखते हैं-

1. आत्मा और अंत:करण (मन बुद्धि चित्त आदि) 2. ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम। 3. अपनी सकल उत्तम सामग्री। 4. सब सामर्थ्य। हविषा के चारों मंत्रों में दिए अर्थ को एक साथ शमन्वय करके लिखे तो परमात्मा के लिए हविर्दान होगा- सम्पूर्ण समग्र सामर्थ्य से अपनी सकल उत्तम सामग्री, अर्थात् जीवन की उपलब्धि को योगाभ्यास और अतिप्रेम से आत्मा और अंत:करण को परमात्मा को अर्पित कर दें। चारों मंत्रों में भक्ति का अर्थ निम्न प्रकार दिया हुआ है-

1. अपने सब सामर्थ्य और अपनी सकल उत्तम सामग्री से परमेश्वर की भक्ति अर्थात् विशेष यत्न से परमेश्वर के आदेशों, उपदेशों के अनुसार अपना जीवनयापन करें। समग्र रूप से 'हविषा विधेम' का भाव हुआ कि हम अति प्रेम से योगाभ्यास के माध्यम से अपने आत्मा और अंत:करण अर्थात अपने मन-बुद्धि चित्त आदि से परमेश्वर की स्तुति के साथ प्रभु के आदेशों-उपदेशों के अनुकूल अपने जीवन का निर्माण करें। यह उपासना का सुष्ठु सुंदर रूप होगा।

(शेष अगले अंक में)

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जाए।

■ **प्रबंध संपादक : 9871798221, 7011279734**

गौतम ऋषि का न्याय दर्शन

■ डॉ. मणीन्द्र नाथ ठाकुर

सांख्य और योग दर्शन की तरह न्याय दर्शन का भी उद्देश्य मानव कल्याण है, लेकिन इसका रास्ता अलग है। जहां सांख्य और योग में चैतन्य होने की बात कही गई है, वहीं न्याय दर्शन में इसके लिए यथार्थ के ज्ञान को महत्व दिया गया है। यथार्थ का ज्ञान तार्किक ढंग से होने पर मनुष्य को संसार का रहस्य समझ में आ जाता है। इसलिए न्याय एक घोर यथार्थवादी दर्शन है।

यथार्थवादी विश्लेषण इस दर्शन की मान्यता है कि मनुष्य जिस वातावरण में रहता है, उसके चारों तरफ स्थूल जगत व्याप्त है। उस जगत के मूल में जो व्यक्त-अव्यक्त तत्व हैं, उन सबके यथार्थ की जानकारी से मनुष्य का कल्याण हो सकता है।

ज्ञान के अभाव में मनुष्य अंधकार में रहता है। यही उसके बहुत से दुखों का कारण होता है। मिथ्याज्ञान से दोष, दोष से प्रवृति, प्रवृति से जन्म और जन्म से दुख होता है। इन कारणों के दूर हो जाने से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। जहां सांख्य और योग दर्शन साक्षी भाव के साथ एकाग्रचित्त होकर मन की आंखों से सब कुछ देखने की बात करता है, वहीं न्याय दर्शन बाह्य जगत के पूर्ण विश्लेषण से अपनी चेतना को मिथ्या ज्ञान से मुक्त करने की बात करता है। यही कारण है कि न्याय के प्रवर्तक गौतम ऋषि को अक्षपाद (पैरों में भी आंख वाला) कहा जाता था, क्योंकि हर बात की पूरी यथार्थवादी जांच करना उनका स्वभाव था। दुख का कारण मिथ्याज्ञान न्याय मानता है कि मिथ्याज्ञान से ही मनुष्य में काम, क्रोध, मद, लोभ जाग्रत होता है और वह दैनिक जीवन में मानवता विरोधी कार्यों में प्रवृत्त होता है।

गौतम के न्याय सूत्र में सोलह पदार्थों का वर्णन किया गया है- प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हैत्याभास, छल, जाति, निग्रह स्थान। प्रमाण शब्द प्रमा से बना है। प्रमा का अर्थ है यथार्थ अनुभव। अनुभव के साधन हैं ज्ञानंद्रियां कुछ अनुभव सही और कुछ भ्रम भी हो सकते हैं। अनुभव को प्रमाण की कसौटी पर कसने से जो खरा उतरे, उसे ही प्रमा या प्रामाणिक अनुभव कह सकते हैं। प्रत्यक्ष ही प्रमाण न्याय चार तरह के प्रमाणों की चर्चा करता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

प्रत्यक्ष का अर्थ है इंद्रियों के साथ सीधा संपर्क होना, अर्थात स्वयं सुनना, देखना, चखना आदि। चार्वाक केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानते हैं, लेकिन न्याय अन्य तीन प्रमाणों को भी महत्वपूर्ण मानता है। निष्कर्ष तक पहुंचने का जो साधन हो, उसे अनुमान कहते हैं। एक वस्तु से दूसरे वस्तु की तुलना कर उसका ज्ञान होना उपमान कहलाता है।

यथार्थ वाक्य या विद्वानों की कही हुई बातें शब्द प्रमाण कहलाती हैं। प्रमाण के द्वारा हम अपने अनुभव के सही या गलत होने का विश्लेषण कर सकते हैं। जिन पदार्थों के बारे में अनुभव प्राप्त किया जा सके, उसे प्रमेय कहते हैं। प्रमाण के साधनों से प्रमेय की जांच करते हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, 12 तरह के प्रमेय होते हैं- आत्मा, शरीर, इंद्रियां बुद्धि मन, प्रवृति, दोष, प्रत्यय भाव, फल, दुख और अपवर्ग। अनिश्चित ज्ञान ही संशय है।

संशय को दूर करने के लिए दृष्टांत की आवश्यकता होती है। कई दृष्टांतों से प्रमाणिकता को पुष्ट कर सिद्धांतों का निर्माण किया जाता है। सिद्धांत चार प्रकार के होते हैं। सर्वतंत्र सिद्धांत- जिसे सभी शास्त्रों की मान्यता प्राप्त हो। प्रतितंत्र सिद्धांत- जो सामान तंत्र में मान्य हो, लेकिन दूसरे तंत्र में नहीं।

अधिकरण सिद्धांत- जिसे सिद्ध करने से दूसरे प्रकरणों की भी सिद्धि हो जाती है। सिद्धांतों की तार्किक जांच जरूरी है। जिस वाक्य की सिद्धि करनी होती है, उसे प्रतिज्ञा वाक्य कहते हैं। जिसके कारण इसकी उत्पति होती है, उसे हेतु कहते हैं। कारण के अनुकूल या प्रतिकूल दृष्टांत को उदाहरण कहते हैं। उदाहरणों के आधार पर जो निष्कर्ष निकलता है, उसे उपनय कहते हैं। प्रतिज्ञा के प्रमाणित होने के बाद कहे गए कथन को निगमन कहते हैं।

उदाहरणार्थ-पहाड़ी पर आग है (प्रतिज्ञा), क्योंकि वहां धुआं है (हेतु वाक्य), जहां- जहां आग है। वहां-वहां धुआं है, जैसे-रसोई में उदहारण, वहां भी ऐसा ही है। उपनय, इसलिए वहां आग है (निगमन)। सार्वजनिक

हार्दिक शुभकामनाएं

हमारे 'विश्ववारा संस्कृति' के सह-सम्पादक श्री ओमकार शास्त्री जी के घर बेटी का जन्म हुआ है। तदर्थ हार्दिक शुभकामनाएं!!

➲ प्रबंध सम्पादक

प्रक्रिया न्याय दर्शन में सत्य की परीक्षा की प्रक्रिया सार्वजनिक है। दर्शन केवल बड़े दार्शनिकों के बीच संवाद न होकर संपूर्ण समाज के सोचने-समझने का तरीका है। वाद का अर्थ है-ज्ञान प्राप्ति के लिए की जाने वाली बहस। जिस बहस में जीतना ही उद्देश्य हो, उसे विवाद कहते हैं। यदि हार की संभावना के कारण बहस का उद्देश्य भटक जाए, तो उसे वितंड़ा कहा जाता है। हेत्वाभास का अर्थ है- किसी कारण का दिया जाना, जो कारण लगता है, लेकिन यथार्थ में वह कारण नहीं है।

शब्द की विभिन्न वृत्तियों को उलट कर यदि उसके द्वारा किसी बात का विरोध किया जाए, तो वह छल कहा जाता है। इस तरह, न्याय तर्क के द्वारा सत्य तक पहुंचने का मार्ग है। इससे मिथ्याज्ञान की जगह नित्य या प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य दुखों से मुक्त हो सकता है। मिथिला है उत्पत्ति स्थल न्याय दर्शन की उत्पति मिथिला प्रदेश में हुई थी। इसका मूल ग्रंथ गौतम ऋषि का न्याय सूत्र माना जाता है, जिसका काल 300 ईसा पूर्व के लगभग रहा होगा। गौतम के बारे में कई कहानियां मिथिला में प्रसिद्ध हैं। एक कहानी के अनुसार, गौतम अपने शिष्यों को तर्क शास्त्र पढ़ा रहे थे, वे कह रहे थे कि जहां आग है, वहां धुआं है। पर्वत पर धुआं है, इसलिए आग है।

उनकी पत्नी ने धुएं से भरे मिट्टी का एक घड़ा लाकर उनके सामने फोड़ दिया। फिर सवाल किया यहां धुआं तो है, पर आग कहां है? कहते हैं कि इस घटना से सबक लेकर गौतम ने न्याय सूत्र में एक अवयव और जोड़ दिया। यह मान लिया कि तर्क से प्रत्यक्ष की संभावना में संशय रह सकता है। न्याय दर्शन के विकास में वात्स्यायन 300 ई., उद्योतकार 560 ई., वाचस्पति मिश्र 841 ई., जयंत भट्ट 880 ई., उदयनाचार्य 984 ई. आदि कई चिंतकों ने मुख्य भूमिका निभाई। बौद्धों से वाद-विवाद के क्रम में न्याय के एक नए रूप ने भी जन्म लिया, जिसे नव्य न्याय कहते हैं। धीरे-धीरे नव्य न्याय एक स्वतंत्र दर्शन के रूप में विकसित हो गया।

➲

सदाचार, नैतिकता और कर्म का संदेश

आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थकर महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को कुंडग्राम में राजा सिद्धार्थ और माता त्रिशला के पुत्र के रूप में हुआ। इस वर्ष यह तिथि 28 मार्च को है। जन्म से ही महावीर सांसारिक मोह-माया के जंजाल से दूर रहे। तीस वर्ष की आयु में मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी के दिन नग्न दिगंबरी दीक्षा धारण कर वे जैन मुनि हो गए। उन्होंने बारह वर्ष तक घोर तप किया। कथा है कि वैशाख शुक्ल दशमी के दिन वे जुम्बिकागांव के पास ऋजुकुलानदी के तट पर शाल्मलि वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ थे, तभी उन्हें कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ। भगवान महावीर अंतस चेतना के संवाहक और अहिंसक धर्म के परम उद्धोषक थे। उन्होंने मानव धर्म के लिए अनेक सत्यों एवं तथ्य को उद्घाटित किया। प्राणिमात्र के लिए दिए गए उनके संदेश अनुसरणीय हैं। भगवान महावीर ने राजसी ऐश्वर्य का पूर्णत:त्याग किया था और संयम, त्याग और तपस्या पूरा जीवन व्यतीत कर दिया। उन्होंने अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह-ये पांच सूत्र दिए। उन्होंने स्त्री-पुरुष दोनों को धार्मिक स्वतंत्रता दी। उन्होंने कहा-व्यक्ति जन्म से नहीं, बल्कि कर्म से महान बनता है। इसलिए उनके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। उनके अनुसार, जीवन में मिलने वाले सुख और दुख को समान भाव से अंगीकार करना चाहिए।

अहिंसा परमोधर्म: को मानने वाले भगवान महावीर ने कहा कि सदाचार और नैतिकता का जीवन व्यतीत करते हुए व्यक्ति स्वयं ईश्वरत्व प्राप्त कर सकता है। हमें आत्मा के रहस्य को समझने के लिए अहिंसा और सत्य की दृष्टि को अपनाना होगा। महावीर ने जल, वृक्ष, अग्नि, वायु और मिट्टी में भी जीवत्व को स्वीकार किया। उन्होंने अहिंसा की शुद्ध व्याख्या करते हुए जल और वनस्पति के संरक्षण पर भी बल दिया। जल की मितव्ययिता और वनस्पति की सुरक्षा की बात भी उन्होंने कही थी। प्रकृति और पर्यावरण के विरुद्ध चलने से भूकंप, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोपों का हमें सामना करना पड़ रहा है। उनके सिद्धांत पर चलकर हम पर्यावरण और संसार को बचा सकते हैं। इसलिए महावीर स्वामी को आदर देने के साथ हमें पर्यावरण व प्रकृति की सुरक्षा का संकल्प लेना होगा। भगवान महावीर की जितनी आवश्यकता आज से ढ़ाई हजार साल पहले थी, उससे कहीं अधिक वर्तमान युग में है।

➲ **पं. सुनील जैन संचय**

वैदिक धर्म क्यों महान है!

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

संसार में अनेक मत-मतान्तर प्रचलित हैं जो विगत पांच सौ से पांच हजार वर्षों में उत्पन्न हुए हैं। इन मतों ने अपने से पूर्व प्रचलित अवैदिक मतों वा वैदिक धर्म के प्रचलित कुछ सिद्धांतों व मान्यताओं को भी अपनाया है। वैदिक धर्म संसार का सबसे प्राचीन मत है। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को चार वेदों का ज्ञान दिया था। इन चार ऋषियों ने इस ज्ञान को ब्रह्मा जी नाम के ऋषि को दिया। ब्रह्मा जी से ही वेदों के प्रचार की परम्परा आरम्भ हुई। वेद सर्वांगीण धर्मग्रंथ है अर्थात् इसमें मनुष्य के लिए आवश्यक व उपयोगी सभी विषयों का ज्ञान है। वेद का अध्ययन कर मनुष्य का आध्यात्मिक एवं भौतिक सभी प्रकार का विकास होता है।

वेदों का अध्ययन कर तथा वेद की शिक्षाओं को अपनाकर मनुष्य का जीवन आदर्श जीवन बनता है। इससे वह स्वस्थ एवं निरोग रहता है और जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होता है। अन्य मतों में धर्म की परिभाषा भी स्पष्ट नहीं है। अन्य मत अपने अपने आचार्य, गुरु व मत के संस्थापक की शिक्षाओं के पालन को ही अपना कर्तव्य मानते हैं। वह अपने मत की मान्यताओं के सत्यासत्य होने की परीक्षा नहीं करते। हमारे ऋषि-मुनि वेदों की मान्यताओं को सत्य की कसौटी पर कस कर ही उनका प्रचार करते थे और उन वैदिक परम्पराओं से ही समाज तथा मानव मात्र का कल्याण व हित सिद्ध होता आया है। अनेक मत ऐसे हैं जिनका उद्देश्य येन केन प्रकारेण अपने मत के अनुयायियों की संख्या बढ़ाना है। वोट के भिक्षुक राजनीतिक दल इस प्रवृत्ति पर आंखें मूंदे रहते हैं। भारत में जो वेदेत्तर मतानुयायी हैं वह सब इसी प्रकार से मतान्तरित वा धर्मान्तरित होकर अस्तित्व में आये हैं। सभी मतों में अपनी मान्यताओं व सिद्धान्तों की गुणवत्ता व दोषों को जानकर असत्य के त्याग तथा उनमें संशोधन कर उन्हें समयानुकूल उपयोगी व जनहितकारी बनाने पर ध्यान नहीं दिया जाता। वह सब वर्तमान में भी उसी स्थिति में हैं, जो उनके प्रचलन व आरम्भ के समय में थी।

विचार करने पर अनुभव किया जाता है कि धर्म व विज्ञान की मान्यताओं को परस्पर पूरक होना चाहिये। किसी मत व धर्म कि जो मान्यतायें ज्ञान व विज्ञान के विरुद्ध होती हैं वह अज्ञान व अंधविश्वासों से युक्त होती हैं। अज्ञान व अंधविश्वास मनुष्य की उन्नति में बाधक होते हैं जो मनुष्य को पतन के मार्ग पर ले जाते हैं। भारत की पराधीनता व पतन का कारण भी धार्मिक अज्ञान व अंधविश्वासों से युक्त सामाजिक परम्परायें ही थीं। ज्ञान व विज्ञान मनुष्य को जगत के सत्य नियमों से परिचित कराते हैं। पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद विज्ञान का आरम्भ विगत तीन चार सौ वर्ष पूर्व माना जा सकता है और इस अल्प अवधि में विज्ञान के प्राय: सभी सिद्धान्तों व मान्यताओं में उत्तरोत्तर आवश्यकतानुसार परिवर्तन व संशोधन हुआ है। किसी मान्यता व सिद्धांत में चाहे व धर्म हो या विज्ञान, इसके प्रवर्तकों का अल्पज्ञ होना

वेदों का अध्ययन कर तथा वेद की शिक्षाओं को अपनाकर मनुष्य का जीवन आदर्श जीवन बनता है। इससे वह स्वस्थ एवं निरोग रहता है और जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होता है। अन्य मतों में धर्म की परिभाषा भी स्पष्ट नहीं है। अन्य मत अपने अपने आचार्य, गुरु व मत के संस्थापक की शिक्षाओं के पालन को ही अपना कर्तव्य मानते हैं। वह अपने मत की मान्यताओं के सत्यासत्य होने की परीक्षा नहीं करते। हमारे ऋषि-मुनि वेदों की मान्यताओं को सत्य की कसौटी पर कस कर ही उनका प्रचार करते थे और उन वैदिक परम्पराओं से ही समाज तथा मानव मात्र का कल्याण व हित सिद्ध होता आया है। अनेक मत ऐसे हैं जिनका उद्देश्य येन केन प्रकारेण अपने मत के अनुयायियों की संख्या बढ़ाना है। सभी मतों में अपनी मान्यताओं व सिद्धान्तों की गुणवत्ता को जानकर असत्य के त्याग तथा उनमें संशोधन कर उन्हें समयानुकूल उपयोगी व जनहितकारी बनाने पर ध्यान नहीं दिया जाता। वह सब वर्तमान में भी उसी स्थिति में हैं, जो उनके प्रचलन व आरम्भ के समय में थी।

है। विज्ञान का आरम्भ व उन्नति मनुष्यों ने अपने ज्ञान, अनुभूतियों तथा तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार की है। सभी परवर्ती वैज्ञानिकों ने पूर्व खोजे गये वैज्ञानिक रहस्यों वा सिद्धान्तों की परीक्षा की और उनमें अपेक्षित सुधार व संशोधन किये। यह क्रम वर्तमान में भी जारी है। वैज्ञानिक जगत में कोई नया या पुराना, अनुभवहीन व अनुभवी वैज्ञानिक यह नहीं कहता कि पूर्व का अमुक वैज्ञानिक बहुत बड़ा वैज्ञानिक था इसलिये उसके खोजे गये किसी सिद्धांतों में परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

हम विज्ञान व वैज्ञानिकों को अपने नियमों व सिद्धांतों पर सतत विचार, चिंतन-मनन व परीक्षण करने तथा उसमें किसी पूर्व वैज्ञानिक की त्रुटि या न्यूनता ज्ञात होने पर उसकी उपेक्षा न करने के स्वभाव वा प्रवृत्ति की प्रशंसा करते हैं और उनके प्रति नतमस्तक हैं। किसी वेदेतर वा अर्वाचीन मत में ऐसे विचार, मनन, परीक्षण एवं सशोधन की परम्परा नहीं है। यदि वह ऐसा करें तो उनके अस्तित्व पर ही खतरा बन सकता है। वैदिक धर्म ही अपने अनुयायियों को विचार, चिंतन, मनन, परीक्षण एवं आवश्यकता पड़ने पर संशोधन का अधिकार देता है। इस कारण से वैदिक घर्म पुरातन व आधुनिक दोनों समयों में सबके लिये ग्राह्य एवं पालनीय धर्म बना हुआ है। सत्यार्थप्रकाश में प्रकाशित यही वैदिक सद्धर्म भविष्य के सभी मनुष्यों का धर्म हो सकता है वा होगा। इसका कारण यह है कि इसकी नींव सत्य पर, ईश्वर के ज्ञान पर तथा प्रकृति के अनुकूल ज्ञान व विज्ञान के नियमों पर आधारित है।

वैदिक धर्म अपनी ज्ञान-विज्ञान युक्त मान्यताओं के कारण ही संसार के सब मनुष्यों के लिये महान धर्म है। वेदों की शिक्षायें किसी एक मत-विशेष, उसके आचार्य व अनुयायियों के लिये न होकर मानव मात्र के लिये हैं और यह सभी मनुष्यों एवं प्राणीमात्र के लिये हितकारी एवं कल्याणप्रद भी हैं। वेदों की कोई मान्यता सत्य नियमों व वैज्ञानिक सिद्धान्तों के विपरीत नहीं है। वेद और विज्ञान दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। वेद की शिक्षाओं से मनुष्यों का सर्वांगीण विकास व उन्नति होती है। वेद-धर्म का पालन करने से ही मनुष्य का अभ्युदय अर्थात सांसारिक उन्नति होने सहित पारलौकिक उन्नति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति भी होती है।

मोक्ष के विषय में वेदेतर मतों को ज्ञान ही नहीं है। वेदेतर मतों में स्वर्ग की कल्पना है परंतु उसका ज्ञान व विज्ञान पर आधारित स्वरूप जिसे आत्मा व बुद्धि स्वीकार करे, उपलब्ध नहीं होता। वेदों में स्वर्ग नाम का कोई स्थान इस अनन्त ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है। स्वर्ग सुख विशेष को कहते हैं जो हमें इस मनुष्य जीवन में सत्य धर्म का आचरण करने से प्राप्त होता है। स्वर्ग का अर्थ सुख या सुख विशेष होता है। जो व्यक्ति दुःखों से रहित है वही सुखी है व स्वर्ग में है। परमात्मा हमारे मनुष्य योनियों के कर्मों के सुख व दुःख रूपी फलों को देते हैं। ईश्वर हमारे पुनर्जन्म में हमारे कर्मों के अनुसार जाति, आयु व भोग की व्यवस्था करते हैं। यदि परमात्मा हमें मनुष्येतर योनि में भेजता है तो वहां हम अपने पूर्वजन्म के कर्मों का फल भोगते हैं। मनुष्येतर सभी योनियां नरक का धाम कही जा सकती हैं। उन योनियों में मनुष्य योनि के समान सुख की उपलब्धि नहीं होती। मनुष्य योनि में भी यदि दुःख अधिक व सुख कम हैं तो उसे भी नरक व स्वर्ग दोनों से युक्त माना जाता व माना जा सकता है।

मोक्ष स्वर्ग व नरक की दोनों अनुभूतियों से भिन्न पूर्णानंद की अवस्था होती है जिसमें जीवात्मा जन्म व मरण के बंधन से छूट कर ईश्वर के सान्निध्य में आनन्द का लाभ प्राप्त करता है। मोक्ष की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों की होती है। यह ईश्वर का एक वर्ष होता है जिसे परांतकाल कहते हैं। इस अवधि में जीवात्मा जन्म मरण से छूट कर आनन्द की अवस्था में रहता है। इसका विस्तृत वर्णन ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास में है। वहां मोक्ष के विषय को पढ़कर लाभ उठाया जा सकता है। ➲➲

प्रेरक वचन

- जिसके अंदर बल हो, उसके भीतर भाव उत्पन्न होता है। वह दूसरों का कल्याण करता है, दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझता है।
- हमारे जीवन में एक समय के लिए एक आवश्यक कार्य होना चाहिए और प्रत्येक आवश्यक कार्य के लिए कोई नियत समय होना चाहिए। नियत समय पर जो कार्य हो, वह हृदय से किया जा सकता है तथा उसको करने की इच्छा स्वत: ही मन में उत्पन्न होती है।
- जैसे मनुष्य के विचार होते हैं, वैसा ही वह स्वयं बन जाता है। उसके विचार तथा व्यवहार भी उसी प्रकार के हो जाते हैं। जो लोग वेदों का स्वाध्याय करते हैं, वे वेदों का रूप ही बन जाते हैं।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्' इति सूक्तिः सर्वान् जनान् सत्य भाषणे नियोजयति। किंतु सदा सत्यभाषणः सरलं सम्भवं च न भवति। कदाचित्कुलमोहः कदाचित् स्वजनमोहः कदाचिच्च स्वार्थः सत्यभाषणे बाधको भवति। कदाचित् सत्यभाषणादपि अहितं भवति तथा असत्यभाषणेनैव हितं सिध्यति। सत्यभाषणं क्वचिदप्रियमपि भवति। तदप्रियमपि सत्यं हितसाधकं चेत्तदा कथं तस्य भाषणं क्रियते इतीदमेव सम्भाषणकौशलम्। ईदृशं कौशलं लोके दुर्लभमेव।

अस्माकं राजनीतौ गुरुजनानामुपदेशः सामवेदिका उपायायश्च लोकव्यवहारस्य सम्यकप्रवर्त्तनाय विहितां आसन्। इमे सामादिकाः शासनादिचिकित्सकानां कटुकौषधितुल्यं परिणामे हितकारा आसन्। अत एव समाजे गुरुपदेशानां प्राणाण्यमासीत्। यतस्तैः कटुवचनैः समाजस्य हितं सिध्यति स्म। साम्प्रतं तु अस्मिन् लोके चाटुक्तिभिः स्वकार्यसाधकानां प्राशस्त्यं दृश्यते। मिथ्यायशोगानेन स्वस्वामिनमनुकूलयित्वा तेषामहितं साधयित्वाऽपि स्वकार्य साधयन्ति। एतादृशामुपलक्ष्यैव कथितं यत्-

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥

अपि च-

स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं।
हितान्न यः संश्रृणुते स किं प्रभुः॥

अतः स एव सन्मित्रं योऽनुचितकर्मणि प्रवृत्तं राजानं स्वामिनं मित्रं वा नीतिमुखराभिः कटूक्तिभिः सम्यक्प्रकारेण शास्ति। यो राजा हितवादिनां हितं न श्रृणोति, तस्य साम्राज्यं नश्यति, वैभवश्च विनश्यत्यचिरेणैव। यावन्तोऽपि दुराचारा लोके दृश्यन्ते, तेषां परिणामः क्षणिकसुखं, अन्ते च भृशं दारुणं दुःखं भवति। एतद्विपरीतं अप्रियमपि हितं वचस्तात्कालिकं दुःखं पश्चाच्च सततं मोदं जनयति। अत एव नश्वराणि सुखानि विहाय सततं मोदप्राप्तये शास्त्रेषु उपाया निर्दिष्टाः सन्ति। यथोक्तं गीतायां श्रीकृष्णेन-

ये तु संस्पर्शजा भोगाः दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय! न तेषु रमते बुधः॥

अपि च-

सुहृदां हितकामानां यः श्रृणोति न भाषितम्।
विपत् सन्निहितास्तस्य स नरः शत्रुनन्दनः॥ इति

ये पुनः चाटुकाराः स्वार्थपरायणाः परोत्कर्षासोढा कुपथगामिनस्ते सरल स्वभावान् भुञ्जन्ते, अन्ते सर्वान् अधोगतिं नयन्ति। एतादृशणि मित्राणि दूरादेव परित्यजेत् उक्तं च-

दुर्जनः प्रियवादी च नैतद्विश्वासकारणम्।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हालाहलं विषम्॥

एतद्विपरीतं सज्जनानां स्वभावो भवति। सत्पुरुषाः कुपथगामिनं सन्मार्गानयनाय कटुक्तिभिः तन्मार्गपरिहाराय निर्दिशन्ति, यस्य परिणामः सुखदो भवति। चाटुकाराः सर्वत्र सुलभाः सन्ति; किंतु हितवादिनः सत्पुरुषा न सर्वत्र सुलभाः। यथा- 'शैले शैले न मणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे' सुलभम्; तथैव नीतिविद्भिः सत्यमुक्तम्-

'अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः'

तथा च-

मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणाः सन्ति न ते मनीषिणः।
सुहृच्च विद्वानपि दुर्लभो नृणां यथौषधं स्वादुहितं च दुर्लभम्॥

अतः सर्वेरपि स्वहितचिन्तकानां कुटुवचनं पथ्यकरं हितकरं मत्वा सहर्ष पालनीयम्। ○○

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **परलोक**- जिसमें सत्यविद्या करके परमेश्वर की प्राप्ति पूर्वक इस जन्म वा पुनर्जन्म और मोक्ष में परम सुख प्राप्त होना है, उसको 'परलोक' कहते हैं।
- **अपरलोक**- जो परलोक से उल्टा है जिसमें दुखविशेष भोगना होता है, वह 'अपरलोक' कहाता है।
- **जन्म**- जिसमें किसी शरीर के साथ संयुक्त होके जीव कर्म करने में समर्थ होता है, उसको 'जन्म' कहते हैं।
- **मरण**- जिस शरीर को प्राप्त होकर जीव क्रिया करता है, उस शरीर और जीव का किसी काल में जो वियोग हो जाना है, उसको 'मरण' कहते हैं।
- **स्वर्ग**- जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह 'स्वर्ग' कहाता है।
- **नरक**- जो विशेष दुख और दुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, उसको 'नरक' कहते हैं। ○○

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

जन्म : 23 जनवरी
शत्-शत् नमन

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था। बोस के पिता का नाम जानकीनाथ बोस और मां का नाम प्रभावती था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वक़ील थे। प्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 संतानें थी, जिसमें 6 बेटियां और 8 बेटे थे। सुभाष चंद्र उनकी नौवीं संतान और पांचवें बेटे थे। अपने सभी भाइयों में से सुभाष को सबसे अधिक लगाव शरदचंद्र से था। नेताजी ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवेंशॉव कॉलेजिएट स्कूल में हुई। तत्पश्चात् उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेज़िडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई, और बाद में भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी के लिए उनके माता-पिता ने बोस को इंग्लैंड के केंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया। अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों के लिए सिविल सर्विस में जाना बहुत कठिन था किंतु सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। 1921 में भारत में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों का समाचार पाकर बोस ने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली और शीघ्र भारत लौट आए। सिविल सर्विस छोड़ने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। सुभाष चंद्र बोस महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे। वास्तव में महात्मा गांधी उदार दल का नेतृत्व करते थे, वहीं सुभाष चंद्र बोस जोशीले क्रांतिकारी दल के प्रिय थे। उनका नारा था- तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय

जन्म : 28 जनवरी
शत्-शत् नमन

लाला लाजपत राय भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने वाले मुख्य क्रांतिकारियों में से एक थे। वह पंजाब केसरी (पंजाब का शेर) के नाम से विख्यात थे और कांग्रेस के गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल) में से एक थे। उन्होंने पंजाब नैशनल बैंक (पीएनबी) और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को दुधिके गाँव में हुआ था जो वर्तमान में पंजाब के मोगा जिले में स्थित है। वह मुंशी राधा किशन आज़ाद और गुलाब देवी के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनके पिता बनिया जाति के अग्रवाल थे। बचपन से ही उनकी माँ ने उनको उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी थी। लाला लाजपत राय ने बहुत से क्रांतिकारियों को प्रभावित किया और उनमें एक थे शहीद भगत सिंह। सन् 1928 में साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान हुए लाठी-चार्ज में बुरी तरह से घायल हो गये और 17 नवम्बर सन् 1928 को परलोक सिधार गए। उनकी मौत का बदला स. भगत सिंह व उनके साथियों द्वारा लिया गया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

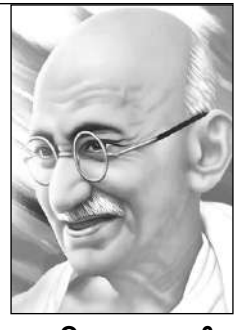

स्मृति : 30 जनवरी
शत्-शत् नमन

महात्मा गांधी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे, अपना पूरा जीवन भारत की आज़ादी के संघर्ष में बिताया। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 में गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उन्होंने अपना पूरा जीवन भारतीय लोगों के एक नेता के रूप में व्यतीत किया। उनके पूरे जीवन की कहानी हमारे लिए एक महान प्रेरणा है। वे बापू या राष्ट्रपिता कहलाते है क्योंकि उन्होंने अपना सारा जीवन हमें आज़ादी दिलाने के लिए ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ने में बिता दिया। वे हमारे देश के असली पिता है क्योंकि ब्रिटिश शासन से हमें मुक्त कराने के लिए उन्होंने वास्तव में अपनी सारी शक्तियों का इस्तेमाल किया। वे 1947 में भारत की आज़ादी के बाद अपने जीवन को जारी नहीं रख सके क्योंकि 30 जनवरी 1948 को एक कार्यकर्ता नाथूराम गोडसे द्वारा उनकी हत्या कर दी गई। वह एक महान व्यक्तित्व थे उन्होंने मृत्यु तक अपना सारा जीवन अपनी मातृभूमि के लिए गुजार दिया। उन्होंने ब्रिटिश शासन से आजादी से हमारे जीवन को सच्चे प्रकाश से प्रबुद्ध कर दिया। उनको महात्मा की पदवी देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द थे।

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के भव्य वार्षिकोत्सव (11 से 15 दिसम्बर) की झलकियां

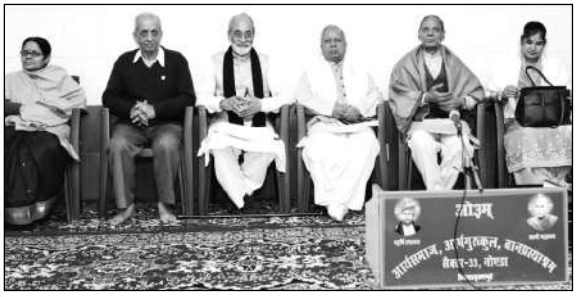

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के भव्य वार्षिकोत्सव (11 से 15 दिसम्बर) की झलकियां

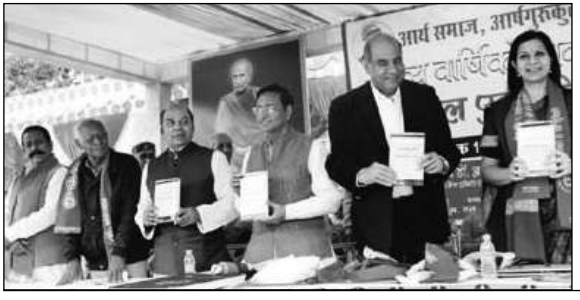

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के भव्य वार्षिकोत्सव (11 से 15 दिसम्बर) की झलकियां

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के भव्य वार्षिकोत्सव (11 से 15 दिसम्बर) की झलकियां

इच्छाओं का ज्वालामुखी

हमें आश्चर्य होता है कि आत्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम तरह-तरह के उपाय अपनाते हैं। हम न केवल आसन, प्राणायाम आदि करने पर बल देते हैं, बल्कि ध्यान में भी उतरते हैं। इसकी कुछ खास वजह है।

दार्शनिक और ऋषि-मुनियों आदि को देखते हैं कि उन्होंने भी स्वयं को जानने के लिए योगासन और ध्यान का सहारा लिया। उन्होंने सबसे पहले बाहरी दुनिया का भली-भांति अनुसंधान किया। बाद में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बाहरी दुनिया की किसी भी वस्तु का रहस्य हमारी आत्मा में ही छुपा हुआ है। दुनिया की सच्चाई जानने में वे आजकल के वैज्ञानिकों की तरह थे। वे हमेशा बाहरी जगत का विश्लेषण भौतिक, रासायनिक और जैविकीय दृष्टिकोण से करते थे। विचारों की भूमिका हमारे दार्शनिक और ऋषि-मुनियों ने मानवों के क्रियाकलापों का अध्ययन किया। यदि हम एकाग्रता के साथ ध्यान देंगे, तो पाएंगे कि किसी भी कार्य क्षेत्र में दो व्यक्तियों का व्यवहार एक-सा नहीं होता है। हमारे ऋषियों ने इस पर काफी शोध किया और पाया कि हमारे कार्यों का सीधा संबंध हमारे विचारों से है। जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसे ही कर्म भी करते हैं।

विचारों की प्रकृति पर ही कर्म का स्वरूप और गुण निर्भर करता है। यदि हम मन में कोई विचार ही न लाएं, तो कोई भी काम करना कठिन हो सकता है। जैसा कि हम देखते हैं कि गहरी नींद में सोया दुराचारी व्यक्ति कभी अपराध नहीं कर पाता। दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति संत है, तो वह सोई अवस्था में समाज-सेवा जैसा कार्य नहीं कर पाता है। यदि हमारे दिमाग में विचार आने बंद हो जाएं, तो हम काम करना भी बंद कर देते हैं।

सकारात्मक इच्छा यहां प्रश्न यह उठता है कि हमारे अंदर विचारों का स्रोत क्या है? दरअसल, हमारे विचार सीधे हमारी इच्छाओं पर निर्भर करते हैं। इच्छाओं का भंडार उस ज्वालामुखी के समान होता है, जहां से विचारों का लावा फूटकर निकलता है। बाद में हम अपने विचारों के आधार पर अपना कर्म करते हैं। यदि हमारी इच्छा सकारात्मक है, तो हमारे विचार भी अच्छे होंगे और साथ ही कर्म भी अच्छा होगा! इसके विपरीत यदि हमारे विचार अच्छे नहीं हैं, तो हमारा कर्म बुरा ही होगा! जिम्मेदार है अज्ञानता ऋषि-मुनियों के अनुसंधान के अनुसार, हमारी गलत इच्छाओं के लिए कहीं न कहीं हमारी अज्ञानता भी जिम्मेदार होती है।

यदि हम अपने वास्तविक स्वरूप यानी जिस महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम देने के लिए हमारा जन्म हुआ है, को भूल बैठे हैं, तो आध्यात्मिक भाषा में वह अविद्या कहलाएगी। सच तो यह है कि कभी-कभी कुछ व्यक्ति अपने शरीर, मन और बुद्धि पर अहंकार करने लगते हैं। वास्तव में यह उनकी अज्ञानता होती है। ऐसे व्यक्ति यदि अपनी आत्मा में झांकने का प्रयास करें, तो उसे सही ज्ञान मिल सकता है।

यह सच है कि ज्यादातर लोग अपने जीवन में सब कुछ पा लेना चाहते हैं। अज्ञानी लोगों में यह प्रवृत्ति धन-संग्रह, सांसारिक सुखों के भोग आदि रूपों में हो सकती है। लेकिन हमें इस बात का ध्यान हमेशा रखना चाहिए कि संसार की सीमित वस्तुओं का संग्रह कर कोई भी व्यक्ति सब कुछ संग्रह नहीं कर सकता है। जीवन के सभी दुखों का यही एकमात्र कारण है। इसलिए दुखों से बचने के लिए हमें अपने भीतर से अपनी अज्ञानता को सदा के लिए निकाल फेंकनी चाहिए। यदि यह विचार हमारे मन में बैठ जाएं, तो यह आत्म-दर्शन या आत्म-अनुभव कहलाता है।

■ **स्वामी चिन्मयानंद**

भोग और त्याग में संतुलन

बुद्ध का एक संन्यासी मित्र था श्रोण, वह राजकुमार था। उसने घर छोड दिया, महल त्याग दिया, परम भोगी था। उसने अपने महल में सारे भोग के आयोजन कर रखे थे। साज, संगीत, नाच, नृत्य, बस यही उसका जीवन था। दिनभर सोता, रातभर शराब पीता, पूरा दिन नाच-गान में व्यतीत करता।

अचानक बुद्ध गांव में आए और श्रोण संन्यासी हो गए। बुद्ध के साथी-संगी चकित हुए। उन्होंने पूछा कि हम सोच भी नहीं सकते कल्पना में कि श्रोण कभी संन्यासी होगा! यह तो आपने चमत्कार कर दिया। बुद्ध ने कहा, इसमें मेरा चमत्कार जरा भी नहीं है। श्रोण को संन्यासी होना ही पड़ेगा, क्योंकि मन एक अति से दूसरे अति पर चला जाता है। और अब तुम देखना इस श्रोण का व्यवहार, तुम कुछ भी नहीं हो।

कुछ दिनों के बाद लोगों ने देखा कि श्रोण तपश्यों में सबसे आगे है। वह नित्य कई उपक्रमों से अपने शरीर को कष्ट पहुंचाता। बुद्ध ने कहा, देखो पहले भी सता रहा था शरीर को, और अब भी सता रहा है। यानी दुश्मनी कायम है।

छः महीने में श्रोण की सुंदर काया सूख गई। कोई पहचान भी नहीं सकता था कि यह वही राजकुमार श्रोण है। बुद्ध एक रात उसके झोपड़े पर गए और उससे कहा कि मैंने सुना है श्रोण कि जब तू राजकुमार था, तो तू वीणा बजाने में कुशल था। एक बात पूछने आया हूं। अगर वीणा के तार बहुत कसे हों, तो संगीत पैदा होगा कि नहीं? श्रोण ने कहा- होगा, लेकिन कर्कश होगा। और बहुत ही ज्यादा कसे हों, तो तार टूट जाएंगे, संगीत पैदा नहीं होगा।

बुद्ध ने कहा कि फिर संगीत पैदा होने का नियम क्या है? श्रोण ने कहा, तार मध्य में हों। न तो बहुत कसे, न बहुत ढीले। वही मध्य-बिंदु खोजना संगीतज्ञ की कुशलता है। बुद्ध उठ खडे हुए और कहा, श्रोण, यही कहने आया था कि जो संगीत का नियम है, वही जीवन का नियम भी है। जीवन में भी तभी समाधि का संगीत पैदा होगा, जब ठीक मध्य में तार होंगे। अतियों से बच! भोग से त्याग पर चला जाना आसान है। भोग और त्याग के मध्य में रुक जा, वहीं संतुलन है। जैसे-जैसे ध्यान बढ़ेगा, तो मन मध्य में आना शुरू होगा। दोनों तरफ की शत्रुता गिरेगी और एक मैत्री-भाव तुम्हारे भीतर आविर्भूत होगा।

जीवन में भी तभी समाधि का संगीत पैदा होगा, जब ठीक मध्य में तार होंगे। अतियों से बच! भोग से त्याग पर चला जाना आसान है। भोग और त्याग के मध्य में रुक जा, वहीं संतुलन है। जैसे-जैसे ध्यान बढ़ेगा, तो मन मध्य में आना शुरू होगा। दोनों तरफ की शत्रुता गिरेगी और एक मैत्री-भाव तुम्हारे भीतर आविर्भूत होगा। शरीर तो मंदिर है, प्रकृति की एक अनूठी अनुकंपा है। प्रकृति ने इतना कुछ शरीर में तुम्हें दिया है। काश, तुम उसका उपयोग कर सको! तुम्हारे शरीर में ही चेतना का वह बिंदु मौजूद है, जहां से समाधि का द्वार खुलता है

शरीर तो मंदिर है, प्रकृति की एक अनूठी अनुकंपा है। प्रकृति ने इतना कुछ शरीर में तुम्हें दिया है। काश, तुम उसका उपयोग कर सको! तुम्हारे शरीर में ही चेतना का वह बिंदु मौजूद है, जहां से समाधि का द्वार खुलता है।

➲ **ओशो**

परिश्रम

- मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती
- धर्म करने से पाप नहीं रहता
- मौन रहने से कलह नहीं होती
- जागते रहने से भय नहीं होता
- दान करने से धन नहीं घटता
- पूजा करने से दुख नहीं होता
- परोपकार करने से कुछ नहीं घटता
- सुख बांटने से सुख नहीं घटता
- खुशी बांटते रहे दुख नजदीक आएगा ही नहीं
- प्रेम एक ऐसा अनुभव है जो मनुष्य को कभी हारने नही देता
- घृणा एक ऐसा अनुभव है जो इंसान को कभी जीतने नही देता
- मन भिखारी की तरह है यह पूरे दिन भटकता रहता है। इसे सात्विक ही बने रहने देना। रजोगुण बढ़ा तो लोभ बढ़ेगा और लोभ बढ़ा तो ज्यादा भाग दौड़ होगी। ज्यादा दौड़ने से अशांति तो फिर आएगी ही आएगी।

❍❍ **आचार्य धर्मराज**

From the Quran and Hadith

Article By Abdullah al-Araby (Feedback@IslamReview.com)

In the Quran, Allah orders Muslims to terrorize non-Muslims on His behalf: "Strike terror (into the hearts of) the enemies of God and your enemies." (Surah 8:60) Fight (kill) them (non Muslims) and God will punish (torment) them by your hands, cover them with shame. " (Surah 9:14) I will instill terror into the hearts of the unbelievers, smite ye above their necks and smite all their finger-tips off them. It is not ye who slew them; it was God. " (Surah 8:13-17) "O ye who believe! Fight the unbelievers... let them find firmness (harshness) in you and know that God iswith those who fear Him." (Surah 9:123) THE FACTSThe following are some real teachings of Islam:

Men are superior to women (Surah 2:228).Women have half the rights of men: in court witness (Surah 2:282) and in inheritance (Surah 4:11).A man may punish his wife by beating her (Surah 4:34).A man may marry up to four wives at the same time (Surah 4:3).A wife is a sex object for her husband (Surah 2:223).•Muslims must fight until their opponents submit to Islam (Surah 9:5).Christians and Jews are cursed according to the Quran (Surah 9:30).•A Muslim must not take a Jew or a a Christian for a friend (Surah 5:54).•A Muslim apostate must be killed (Surah 9:12).• Stealing is punished by the amputation of the hands (Surah 5:41).• Adultery is punished by public flogging (Surah 24:2).•Resisting Islam is punished by death, crucifixion or the cutting off of the hands and feet (Surah 5:36).•Fate decides everyone's eternal destination (Surah 17:13). Every Muslim will pass through Hell (Surah 19:71).•Heaven in Islam is the place where a Muslim will be reclining, eating meats and delicious fruits,drinking exquisite wines, and engaging in sex with virgins (Surah 55:54-56/52:17,19).Few examples of the teachings of Islam:• Men are superior to women. (Surah 2:228)Women have half the rights of men: In court witness. (Surah 2:282); In inheritance. (Surah 4:11)A man may beat his wife. (Surah 4:34)A man may marry up to four wives at the same time (Surah 4:3)• Muslims must fight until their opponents submit to Islam. (Surah 9:5)A Muslim must not take a Jew or a Christian for a friend. (Surah 5:54)A Muslim apostate must be killed. (Surah 9:12)

Stealing is punished by the amputation of the hands. (Surah 5:41)• Adultery is punished by public flogging. (Surah 24:2)No separation between Church and State. (Surah 2:193)• No opposition party allowed. (Surah 4:59)Jihad in the Quran:ALLAH orders Muslims in the Quran to terrorize non-Muslims on His behalf..."Strike terror (into the hearts of) the enemies of God and your enemies." •"Fight (kill) them (non-Muslims), and God will punish (torment) them by your hands, cover them with shame" Surah 9:14"I will instill teror into the hearts of the unbelievers, smite ye above their necks and smite all their finger-tips off them.It is not ye who slew them; it was God." Jihad in the Hadith:IN the Hadith Mohammed also urges Muslims to practice Jihad. Mohammed once was asked, What is the best deedfor the Muslim next to believing in Allah and His Apostle? His answer was..."To participate in Jihad in Allah's cause."

साहित्य की उपयोगिता

साहित्य निर्मल कर सके, आहार और व्यवहार को।
साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके संसार को॥

साहित्य वह जादू है जो देता बदल मस्तिष्क को।
इसमें शक्ति है बदल दे स्वर्ग में जो नर्क को।।
यह ही दर्शा सकता है जीवन को जीवन सार को।
साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके संसार को॥

साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके चिंतन मनन।
साहित्य द्वारा ही खिलाया जा सके सूखा चमन।।
इसमें शक्ति है मिटा सकती जो अत्याचार को।
साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके संसार को॥

साहित्य से ही हो सके निर्माण सारे देश का।
साहित्य से ही हो सके कल्याण सारे देश का।।
इसमें शक्ति है मिटा सकती जो नरसंहार को।
साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके संसार को॥

साहित्य पैदा कर सके योद्धा भी और विद्वान भी।
साहित्य पूरे कर सके पुरखों के सब अरमान भी।।
समाप्त कर सकता है साहित्य जग से भ्रष्टाचार को।
साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके संसार को॥

साहित्य ही छुड़वा सके कुर्सी के पीछे भागना।
साहित्य ही छुड़वा सके, भगवान इसको मानना।।
कर सके यह ही सुखी, दुनियां के हर परिवार को।
साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके संसार को॥

साहित्य ही देता बना, शैतान को इंसान है।
जो सुशासन ला सके, साहित्य वह वरदान है।।
इसमें शक्ति है मिटा सकती जो पापाचार को।
साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके संसार को॥

लक्ष है जीवन का क्या, बतलाये यह ही रास्ता।
यह ही बतलाता है मानव जन्म का है सार क्या।
बल दें पूरा इसके ही, प्रचार और प्रसार को।
साहित्य के द्वारा ही बदला जा सके संसार को॥

➲ स. चतरसेन मल्होत्रा

स्वामी श्रद्धानन्द

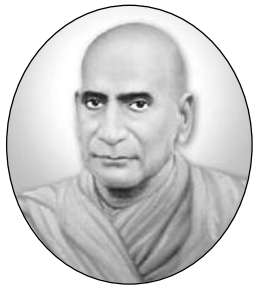

श्रद्धा जीवन का आराध्य है, श्रद्धा सुमन में भरी सुगंध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गए श्रद्धानन्द
सत्य का आधार मिला, सद् चिन्तन का व्यवहार मिला
सद् कर्म सद्भावना का संस्कार मिला
इतिहास को नया आकार मिला
श्रद्धावान बनकर मिटाए तुमने सारे द्वन्द
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, अंधकार में भटके समुदाय
अपने भी जब लगे पराए, परतंत्रता का दंश रुलाए
सूझे जब न कोई उपाय, शुद्धि के पावन मंत्र से खोले सारे बंद
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, सद्ज्ञान का दीप जलाए
गुरुकुलों का भाग्य जगाया, संस्कृति का पथ सजाया
बिछुड़ों को तब गले लगाया
हर कली पुष्प में, चिन्तन की भरने लगी सुगंध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गए श्रद्धानन्द
अहंकार ने राख भरी राष्ट्र के सुहाग में
कलियां पुष्प खूब जले जुल्म की आग में
विष ही विष भरा हुआ था सत्ता के नाग में
बहारें जब घायल हुई जलियांवाले बाग में
अमृतसर में राष्ट्रीय चेतना का तुमसे गूंजा शंख
धर्म के यज्ञ समर्पण में समिधा बन गए श्रद्धानन्द
दयानन्द के तुम अनुयायी धर्म के तुम प्रखर सिपाही
सत्य पथ के तुम हमराही तीन गोलियां सीने पे खाईं
भूत-भविष्य-वर्तमान का श्रद्धा से, जुड़ा संबंध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में समिधा बन गए श्रद्धानन्द।

23 दिसम्बर बलिदान दिवस पर शत्-शत् नमन!! ➲ विजय गुप्त

जागरण भक्ति या मनोरंजन

सुरेंद्र कुमार रैली
अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

देवी मां, सांई बाबा, गुरू गोरखनाथ आदि के नाम पर होने वाले जागरण सनातन धर्म की कोई प्राचीन परम्परा का हिस्सा नहीं बल्कि पिछले 5 दशकों में धर्म के नाम पर कमाई करने का जरिया बन गया है, जिसमें पंडों से लेकर बेसुरे गायकों तक को मोटी रकम प्राप्त होती है। हम अपने दिमाग पर जोर डालकर यह अवश्य सोचें कि वास्तव में शांति, मनन या ध्यान ईश्वर को पसंद है अथवा फूहड़ बेसुरे संगीत पर पूरी रात नाचना, गाना व कूदना? जागरण भक्ति है या मनोरंजन/कमाई का साधन मात्र है? आखिर यह सब भारत में ही क्यों हो रहा है? सोचना आपको है। यदि यह भक्ति है तो हमारे ऋषि, मुनी वनों में क्यों जाते थे? क्या एकांत से अच्छी ईश्वर की कोई दूसरी भक्ति हो सकती है? ईश्वर दर्शन के लिए योग शास्त्र में एकाग्रता को ही प्रमुख साधन के रूप में क्यों बल दिया गया है?

जानिए आज का भविष्य : कुछ लोग अंधेरे और सुनसान रास्तों पर आपको चाकू-छुरी से डराकर आपका माल छीनते है, जिन्हें लुटेरे कहा जाता है। पर कुछ लोग रोज टीवी अखबारों से लेकर दुकान और चौराहे पर बैठकर आपको भविष्य के नाम पर डराकर पैसे हड़पते मिलते है। दरअसल यह कमजोर लोगों के मन का फायदा उठाने का सबसे सरल रास्ता है। यह लोग बड़ी आसानी से दो ग्रह-नक्षत्र आपके पक्ष में और दो ग्रह-नक्षत्र विरोध में खड़े कर देते है। विरोध वाले नक्षत्रों को आपके पक्ष में करने के लिए फीस भी वसूलते है। कुछ को सुबह-सुबह टीवी पर भी हर एक राशि का हिसाब-किताब बताते आसानी से देखा जा सकता है। कमाल देखिये! इस बीच बड़ी सफाई से नग, नगीने रुद्राक्ष आदि बेचने का कार्य भी होता है। भला किसी के कर्म में लिखा दुख कोई मिटा सकता है या किसी के हिस्से की खुशी कोई छीन सकता है? सीधे-सीधे लोग इस नसीब, किस्मत, धर्म से जुड़ा काल चक्र समझकर अपनी कमाई का हिस्सा उन्हे सौंप देते है। असल में यह सीधा और मोटा व्यापार है। जहां इंसान को उसकी किस्मत से डराकर कीमत वसूल की जाती है। सोचिये! एक चाकू से डराकर पैसे वसूलता है दूसरा किस्मत से डराकर, तो दोनों में अंतर क्या है?

शुभ या अशुभ मुहूर्त : मुहूर्त अर्थात कोई संस्कार कराने के लिए समय एवं तिथि आदि का निर्धारण करना। लेकिन एक ही दिन में शुभ-मुहूर्त बताकर हजारों शादियों या संस्कार बता दिए जाते है। दरअसल यह मैरिज इंडस्ट्री बन गई है जिस कारण, मंहगें बैंकट हॉल, फार्म हाउस, हलवाई लेकर बैंड-बाजा और गाड़ियों बेहद महंगी हो जाती हैं। असल में समय, दिन और कलेंडर की कोई भी तारीख शुभ-अशुभ नहीं होती। कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि पंडित द्वारा कोई अशुभ समय बताया गया हो परन्तु उस समय ऐसी कोई दुर्घटना नहीं होती और शुभ बताये गए समय में भयंकर दुर्घटना हो जाती हैं, एक किस्म से यह भी भय का ही व्यापार है।

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 26 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734
उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा

समाचार - सूचनाएं

- 11 से 15 दिसम्बर को आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसमें मूर्धन्य विद्वान डॉ. महावीर प्रसाद द्वारा वेदकथा सुश्री अंजलि आर्या के सुमुधुर भजनों का आनंद सभी ने उठाया। मुख्य अतिथि द्वारा आर्य समाज के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और स्वामी दयानन्द के उपकारों को स्मरण किया, कार्यक्रम में श्री आनंद चौहान, श्री नवाब सिंह नागर, श्री माया प्रकाश त्यागी, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. शशिप्रभा कुमार, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार आदि द्वारा उद्‌बोधन दिया गया। 101 कुंडीय यज्ञ का भव्य आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम अत्यंत ही सफल रहा। (विस्तृत विवरण पेज संख्या 22-23)।
- 25 दिसम्बर को केंद्रीय आर्य सभा के तत्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद व अन्य कई गुरुकुलों के संस्थापक के बलिदान के अवसर पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया जो बलिदान भवन से रैली के रूप में आरंभ होकर रामलीला मैदान में सम्मेलन के रूप में सम्पन्न हुआ। अनेक गुरुकुलों के ब्रह्मचारी, विद्वान, आर्यनेता, संन्यासी वृंद द्वारा उनका भावपूर्ण स्मरण किया गया। अध्यक्ष आर्यरत्न पद्मभूषण महाशय श्री धर्मपाल आर्य रहे।
- केंद्रीय आर्य युवक परिषद के द्वारा 93वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस व नागरिकता कानून के समर्थन में सांसद प्रवेश वर्मा के निवास पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा में प्रात: 8 बजे ध्वजारोहण के पश्चात ब्रह्मचारियों द्वारा क्रांतिकारी गीतों का गायन, भाषण आदि का कार्यक्रम होगा, आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

विनम्र श्रद्धांजलि...

- आदर्श दानवीर, महान समाजसेवी एवं ऋषि पथ के पथिक श्रद्धेय श्री राव हरिश्चंद्र आर्य जी का निधन पिछले दिनों हो गया। वह सरल हृदय, दानवीर आर्य नेता थे। वह अनेक आर्य संस्थाओं, गुरुकुलों, विद्वानों भजनोंपदेशकों, पुरोहितों के पोषक थे। उन्होंने अपनी सीमित आय के बावजूद चैरिटेबल ट्रस्ट बनाकर आर्य रत्न एवं आर्य विभूषण नामक पुरुस्कारों, सम्मानों से अनेक वैदिक विद्वानों, आर्य संन्यासियों एवं दिव्य विभूतियों को सम्मानित किया। वह दानवीरता, मानवता एवं त्याग तपस्या की प्रतिमूर्ति थे। उनके निधन से समाज, परिवार एवं राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुई है।

- आर्य समाज पंखा रोड, सी ब्लॉक जनकपुरी के वर्षों तक प्रधान पद एवं अन्य पदों को सुशोभित करने वाले, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उप प्रधान, अन्तरंग सभा सदस्य एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं वर्तमान उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन जी का लगभग 91 वर्ष की आयु में 16 दिसम्बर 2019 को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार 17 दिसम्बर को पूर्ण वैदिक रीति से बेरी वाला बाग सुभाष नगर स्थित शमशान घाट में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारकों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ किया गया, जिसमें सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा, आर्य केंद्रीय सभा एवं वेद प्रचार मंडलों के अधिकारियों के साथ-साथ अनेक महानुभावों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन भेंट किये। उनकी श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज पंखा रोड में हुई।

- आर्य समाज दीवान हॉल के पूर्व सेवक एवं अधिकारी, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री, गाजीपुर गौशाला के मंत्री चौधरी लक्ष्मीचंद जी का दिनांक 18 दिसम्बर 2019 को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार 19 दिसम्बर को उनके पैतृक गांव कचहेड़ा गाजियाबाद में पूर्ण वैदिक स्थित शमशान घाट में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ किया गया।
- वरिष्ठ मूर्धन्य विद्वान आचार्य सत्यानन्द जी का निधन पिछले दिनों हो गया था। अनेक पुस्तकों का लेखन उन द्वारा किया गया। आर्यजगत को काफी समय तक उनका आशीर्वाद प्रवचनों द्वारा आर्य समाज नोएडा को प्राप्त होता रहा है। सभी आर्यनेताओं को आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के समस्त सदस्यों, अधिकारियों, आचार्यों की ओर से **विनम्र श्रद्धांजलि!!**

❍❍ प्रबंध सम्पादक

आर्यसमाज नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल एवं वानप्रस्थाश्रम बी-69, सेक्टर-33, नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव बुधवार 11 दिसम्बर से ऋग्वेदीय यज्ञ के साथ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में श्री ऊदल आर्य जी के निवास पर आरम्भ हुआ, साथ में भव्य प्रभात यात्रा सेक्टर-70 में निकाली गई। यज्ञ में आर्यजगत की सुप्रसिद्ध भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या ने ईश्वर भक्ति के सुन्दर गीतों का श्रवण कराया। तदुपरान्त आचार्य जयेन्द्र कुमार जी ने अपने सुन्दर वक्तव्य द्वारा यज्ञ पर प्रकाश डाला। उपस्थित सभी लोगों को आनन्द की अनुभूति प्राप्त कराई।

सांयकालीन सभा ऋग्वेदीय पारायण यज्ञ के साथ आरम्भ की गई। वेदपाठ आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया जिसमें मुख्य यजमान माता लक्ष्मी सिन्हा रहीं। ध्वजारोहण और दीप प्रज्जवलन श्री सुधीर सिंघल-मनोहरलाल ज्वैलर्स के कर कमलों द्वारा किया गया। जिसमें सुश्री अंजलि आर्या के गीतों का श्रवण किया। सांयकालीन भोजन की व्यवस्था माता राज मल्होत्रा, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा की गई।

12 दिसम्बर प्रात: यज्ञ श्री कुलवीर भसीन व माता मधु भसीन जी के निवास पर आचार्य जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य जी द्वारा ईश्वर के विशेष गुणों की चर्चा की गई तथा सुश्री अंजलि आर्या ने ईश्वर भक्ति के सुन्दर गीतों का श्रवण कराया। सांयकालीन सभा ऋग्वेदीय पारायण यज्ञ के साथ आरम्भ की गई। तदोपरांत सुश्री अंजलि आर्या जी के गीतों का आनन्द लेने के पश्चात् आचार्य डॉ. महावीर जी-(प्रति कुलपति पतंजति विश्वविद्यालय) जी ने 'जीवन में सुख शान्ति का मार्ग' कैसे प्राप्त किया जा सकता है विषय पर विस्तार से चर्चा की जिससे सभी का मन प्रसन्न हुआ। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. जयेन्द्र जी ने सभी का धन्यवाद करते हुये शांतिपाठ के साथ सभा का समापन किया। सांयकालीन भोजन की व्यवस्था श्रीमती डॉ. प्रियंका एवं डॉ. अनिरुद्ध सेतिया सेक्टर-20 द्वारा की गयी।

13 दिसम्बर प्रात: यज्ञ श्री अशोक आनन्द जी के निवास पर आचार्य जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरांत सुश्री अंजलि आर्या जी ने प्रभु भक्ति के गीतों का श्रवण कराया एवं आचार्य महावीर जी ने ऋग्वेद के मंत्रों की व्याख्या की और जीवन को वेद मार्ग पर चलाने का संदेश दिया। सायंकालीन सभा ऋग्वेदीय पारायण यज्ञ के साथ आरम्भ की गई। तत्पश्चात् सुश्री अंजलि आर्या जी ने अपने क्रांतिकारी गीतों से सभी को आनंदित किया। गुरुकुल के ब्रह्मचरियों ने भी देशभक्ति गीत सुनाये। संस्था के उपप्रधान कै.अशोक गुलाटी जी ने देशभक्ति कविता द्वारा शहीदों को नमन किया। मुख्य वक्ता डॉ. महावीर जी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में शहीदों को नमन किया और अपनी संतानों को संस्कारी बनाने और चरित्र की शिक्षा देने पर जोर देने को कहा। मुख्य अतिथि श्री सुधीर मिड्ढा जी ने अपने विचार व्यक्त कर आर्यसमाज व गुरुकुल के कार्यों की सराहना की। सांयकालीन भोजन व्यवस्था श्री सत्यवीर आर्य एवं सुखवीर आर्य सर्फाबाद सैक्टर-70, नोएडा द्वारा की गई।

दिनांक 14-12-2019 को प्रात: यज्ञ माता लक्ष्मी सिन्हा वानप्रस्थाश्रम नोएडा यज्ञ की यजमान बनी। यज्ञ के अवसर पर आचार्य जी का प्रवचन एवं सुश्री अंजलि आर्या के गीतों का श्रवण सभी ने किया। यज्ञ का प्रसाद श्री कठपालिया जी के सौजन्य से हुआ।

प्रथम सत्र : 9.30 बजे से 1.30 बजे तक महर्षि दयानन्द उपकार एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन सम्मेलन ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री माया प्रकाश त्यागी-कोषाध्यक्षा-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने की। कार्यक्रम में सुश्री अंजलि आर्या जी ने ऋषि के उपकारों के गीत सुनाये तथा आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी ने ऋषि के उपकारों पर कविता सुनाई और डॉ. महावीर जी ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। अन्त में अध्यक्ष महोदय ने सभी का धन्यवाद किया तथा संयोजक डॉ. जयेन्द्र कुमार जी नेऋषि का भावपूर्ण स्मरण कर सभा का शांति पाठ के साथ समापन किया। प्रीतिभोज श्री योगेश एवं सरला अरोड़ा, सेक्टर-44 नोएडा के सौजन्य से हुआ।

द्वितीय सत्र : आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती डॉ. मंजू नारंग जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. सुनीति जी ने 'परिवार एवं समाज की आधार स्तम्भ नारी' विषय पर अपने विचारों के द्वारा नारी शक्ति के उपकारों को बताया। श्रीमती शकुंतला सेतिया एवं श्रीमती ममता चौहान का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि ऊषा

किरण, संध्या शर्मा, सुषमा आर्या द्वारा मार्ग दर्शन दिया गया तथा सभी अंजलि आर्या द्वारा भजन प्रस्तुत किये गये। अंत में महिला समाज की प्रधाना गायत्री मीना जी ने अपने वक्तव्य में नारी जाति के गौरव को बताया। कार्यक्रम का संयोजन व कुशल संचालन श्रीमती मधु भसीन जी ने किया। कार्यक्रम के बाद 'प्रसाद वितरण' माता ओमवती गुप्ता वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सौजन्य से हुआ।

तृतीय सत्र : सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री डॉ. डी.के गर्ग चेयरमैन-ईशान शिक्षण संस्थान के रूप में पधारे। सत्यार्थ प्रकाश एवं आर्यसमाज के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। मुख्य वक्ता डॉ. महावीर जी ने अपने सुंदर विचारों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के सच्चे अर्थ को बताया। कार्यक्रम का संयोजन करते हुये आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी ने ऋषि को कविता समर्पित की। अध्यक्ष डॉ. वीरपाल विद्यालंकार जी ने सभी का धन्यवाद कर सत्र का समापन किया। रात्रिभोज श्री शैलेन जगिया सेक्टर-26, नोएडा के सौजन्य से किया गया।

दिनांक 15-12-2019 प्रात: 8 बजे से 101 कुण्डीय 'विश्व शान्ति सौहार्द महायज्ञ' आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी के बहाव में सम्पन्न हुआ व ऋत्विक श्रीमती गायत्री मीना एवं ओमकार शास्त्री रहे। जिसमें वेदपाठ आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारी विवेक आर्य और दीपक आर्य द्वारा किया गया। यज्ञ के मनोरम दृश्य को देखकर नोएडा के लोग भारी संख्या में उमड़ पड़े और सभी ने वैदिक यज्ञ में आहुति प्रदान कर धर्म लाभ उठाया। यज्ञ व्यवस्था श्री ओमकार शास्त्री, श्री विक्रम आर्य, श्री कैलाश आर्य, श्री शिवकुमार शास्त्री आदि व गुरुकुल नोएडा के ब्रहाचारियों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। अंत में यज्ञब्रह्मा जी द्वारा याज्ञिकों को प्रसाद प्रदान कर आशीर्वाद दिया गया। इस अवसर पर जितेन्द्र आर्य एवं कविता जी परिवार द्वारा वर्ष 2019 के कैलेंडर का वितरण किया गया। यज्ञ हेतु सहयोग श्री रोहन सिन्हा परधेवता माता लक्ष्मी सिन्हा वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सौजन्य से की गई। यज्ञ प्रसाद श्रीमती श्री कुलवीर भसीन जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

मुख्य समारोह प्रात: 9:30 बजे आरम्भ हुआ। जिसमें ठा. विक्रम सिंह-अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, श्री आनंद चौहान, डॉ. शशि प्रभा कुमार, आचार्य धर्मपाल आर्य, श्रीमती पूजा चौहान, श्रीमती जयश्री चौहान, डॉ. अनिल आर्य आदि महानुभावों ने भाग लिया। मुख्य वक्ता डॉ. महावीर जी, डॉ. महेश विद्यालंकार जी, डॉ. जयेन्द्र कुमार जी ने अपने विचार दिये। भजनोपदेशक सुश्री अंजलि आर्या जी ने गुरुकुल व बलिदान के संबंध में गीत सुनाये। इस अवसर पर पं. रामप्रसाद बिस्मिल व स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को याद किया गया। कार्यक्रम के अवसर पर ब्रह्मचारियों द्वारा देशभक्ति गीतों पर अभिनय तथा ब्र. आदित्य ने मां पर कविता, ताराचन्द द्वारा ओजस्वी भाषण एवं ब्रह्मचारियों द्वारा शारीरिक प्रदर्शन दिखाये गये।

इससे प्रसन्न होकर संस्था के संरक्षक श्री आनन्द चौहान-निदेशक अमीटी शिक्षण संस्थान द्वारा ब्र. को प्रोत्साहन प्रदान किये गये। गुरुकुल के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को माता नारायणी देवी पुरुस्कार, श्री वीरप्रताप अरोड़ा द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. महावीर जी की मंत्री जी द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई व संस्था के अधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री ईश नारंग, श्री लाजपत राय आर्य, श्री चन्द्रपाल आर्य, श्री विजय आर्य को अभिनन्दन पत्र प्रदान किये गये। इसी के साथ माता लक्ष्मी सिन्हा, श्रीमती गायत्री मीना, श्रीमती आदर्श विश्नोई, श्रीमती संतोष लाल को इनके द्वारा किये सहयोग के लिये सम्मानित किया गया। भिन्न-भिन्न समाजों से पधारे अधिकारियों और महानुभावों को स्मृति चिन्ह देकर आर्यसमाज नोएडा के प्रधान एवं मंत्री जी द्वारा सभी को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन कर आचार्य जयेन्द्र कुमार जी ने सभी का धन्यवाद करते हुये शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

कार्यक्रम में सर्वश्री ओमवती, सरला कालरा, गायत्री मीना, कै. अशोक गुलाटी, रविशंकर अग्रवाल, शैलेन जगिया, श्री नरेन्द्र सूद, परेश गुप्ता, राज सरदाना, जितेन्द्र आर्य, सौरभ आर्य, वृंदा सग्गी, लक्ष्मी सिन्हा, कमलेश भाटिया, मधु भसीन, अन्नपूर्णा धवन, रमेश चन्द्र, विजेन्द्र कठपालिया, विशाल, सतेन्द्र, ओमकार शास्त्री, राकेश तिवारी, शिवकुमार, कैलाश आर्य, विक्रम शास्त्री, विवेक आर्य, दीपक कुमार, प्रमोद व अनेक संन्यासी वृन्द, सेक्टर-33 के निवासी व उपस्थित सभी आर्यजनों ने कार्यक्रम को सराहा। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सभी महानुभावों ने ऋषि भोज (सौजन्य श्रीमती/श्री अशोक अरोड़ा सेक्टर-52 नोएडा) से प्राप्त कर आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के भव्य वार्षिकोत्सव की भविष्य के लिए यादें लेकर अपने-अपने घरों को लौटे।

➲➲ **संपादक मंडल, विश्ववारा संस्कृति**

सेहत के लिए रामबाण है पपीता

पपीता सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है, स्वाद के साथ साथ ये हमारे शरीर के लिए काफी स्वास्थकारी होता है। अगर आप रोजाना पपीता खाते हैं, तो इससे आपके शरीर में विटामिन ए की कमी नहीं होती, साथ ही पपीते में एंजाइम्स और फाइबर की प्रचुर मात्रा में मौजूद होता है। अगर आप रोजाना पपीते खाते हैं, तो इससे आपकी पाचन शक्ति अच्छी रहती है। पपीता न केवल हमारी सेहत के लिए बल्कि स्किन के लिए काफी अच्छा होता है। कच्चे पपीते में कुछ ऐसे एंजाइम पाए जाते हैं जो कि हमारे शरीर में पाए जाने वाले पोषक तत्व के लिए अच्छे होते हैं। आयुर्वेद में सुबह खाली पेट कच्चा पपीता खाना सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद बताया है। वहीं पक्के हुए पपीते में विटामिन, खनिज पदार्थ के साथ अन्य कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो हमें कई तरह की बीमारियों से बचा कर रखता है।

मां के दूध के लिए फायदेमंद

जो महिलाएं स्तनपान कराती हैं उनके लिए पपीता बहुत ही फायदेमंद होता है। यह महिलाओं में दूध उत्पादन की क्षमता को बढ़ाता है। जिससे शिशुओं में आहार की मात्रा पूरी हो जाती हैं। वहीं गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को इसका सेवन नही करना चाहिए।

हेल्दी स्किन : हेल्दी स्किन के लिए हम अक्सर रासायनिक उत्पादों का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन स्किन की इन बीमारियों के लिए पपीता बहुत ही फायदेमंद होता है। अगर त्वचा से संबंधी किसी भी तरह का संक्रमण है तो पपीते का इस्तेमाल करें। यह बहुत एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है। इसका प्रयोग आप मुंहासे, पिग्मेंटेशन, त्वचा की सूजन को दूर करने के लिए कर सकते हैं।

कोलेस्ट्रोल घटाने में सहायक : पपीते में उच्च मात्रा में फाइबर मौजूद होता है. साथ ही ये विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स से भी भरपूर होता है. अपने इन्हीं गुणों के चलते ये कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में काफी असरदार है।

मासिक धर्म : अगर महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान दर्द, ऐंठन या इस दौरान अन्य किसी समस्या का सामना कर पड़ रहा है तो कच्चा पपीता बहुत ही फायदेमंद होता है। वहीं पपीते के पत्तों के प्रयोग से भी मासिक धर्म के दौरान होने वाला दर्द कम होता है। इससे महिलाओं में होने वाले रक्त स्त्राव को भी कंट्रोल किया जा सकता है।

बढ़ाता है प्रतिरोधक क्षमता : पपीता व बीज आपकी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट होने के साथ विटामिन ए, विटामिन सी, ई की भी अच्छी मात्रा पाई जाती है। कच्चा व हरा पपीता सर्दी व खांसी को भी रोकने में मदद करता है।

कब्ज में फायदेमंद : जब पाचन संबंधी समस्या होती है, तो सारा दिन शरीर में ऊर्जा की भी कमी रहती है। पपीता व उसके बीजों में अमीबा विरोधी और एंटी परजीवी गुण पाए जाते हैं। जो कब्ज, एसिडिटी, पेट के अल्सर, गैस की समस्या को दूर करते हैं।

आंखों को रखता है स्वस्थ : पपीते में विटामिन ए काफी मात्रा में पाया जाता है, जो आंखों की रोशनी को कम नहीं होने देता है। बढ़ती उम्र के साथ आंखों की रोशनी कम होने लगती है, ऐसे में पपीते को आहार में शामिल करने से इस समस्या से बचा जा सकता है।